



अनेक दुर्गुण और थोड़े सद्गुण

FERDINANDO FREGA · GILLETTENARRATIVE · GILLETTEVATICANO · 10/17

अप्रत्याशित होने के अपने फ़ायदे हैं, पर अपने अंधे कोने भी। वे पल जब आप इंतज़ार करते हैं कि स्पष्टता खुद आ जाए। और वह आती भी है। बस इंतज़ार करना आना चाहिए। जो कोई इतालवी हुनर नहीं है।

पहले से कोई परियोजना नहीं। कोई योजना नहीं। वह काम उनके लिए सुरक्षित है जिन्हें विचारशील दिखने के लिए मोटी रक़म मिलती है, जबकि असली आँकड़े सहज बोध और अंतर्ज्ञान से बँधे रहते हैं। दो निरपेक्ष मूल्य। यह कभी न भूलते हुए कि हम सक्षम स्त्रियों के बेटे हैं। इसे कभी मत भूलिए।

अमेरिकी इसे work in progress कहते हैं, और आसानी से कह देते हैं। हम इतालवियों में प्रबंधकीय दृष्टि नहीं है। दो हज़ार साल बाद भी हम अपनी जगहें बचाने में लगे हैं। इस पर बहस करते हुए कि किसके पास क्या था, और कभी इस पर नहीं कि सचमुच किसका क्या था। और हमेशा प्राचीन रोमनों की दुहाई देते हुए।

जल-सेतुओं और शौचालयों के कुशल निर्माता। अधीनता, दबदबे, हड़प और भेदभाव के उस्ताद। अंतहीन मनोरंजन और भोग-विलास में लिपटे हुए। अनेक दुर्गुण और थोड़े सद्गुण। वह जाति जिसने उस सहकर्मि को सूली पर ठोक दिया जो दो हज़ार साल पहले एक शब्द और एक किताब लेकर आया था। वह Bezos और Amazon के आने की घोषणा करने नहीं आया था। वह यह दिखाने आया था कि किसी और की खाल पर कारोबार कैसे खड़ा किया जाता है और उसका मालिक कैसे बना जाता है।

दो हज़ार साल बाद भी पापस्वीकार-कक्ष उसी कमरे में है। पाप वही हैं। बस प्रायश्चित पर दोबारा सौदेबाज़ी हो गई है।

वह जाति जिसने सब कुछ गँवा दिया और जिसके पास सार्वजनिक पेशाबघर बचे, और एक सरकार जो इस तरह शासन करती है जैसे कोई जल्दबाज़ी में प्रार्थना करता हो। आँखें बंद। शब्द रटे हुए। दिमाग़ पहले ही दरवाज़े के बाहर।

हम Washington से सुरक्षा माँगते हैं और उसे संप्रभुता कहते हैं। हम Brussels से पैसा माँगते हैं और उसे गरिमा कहते हैं। फिर हम एक हाथ किसी और की जेब में रखे हुए ही प्रभु-भोज लेने चले जाते हैं।

चर्च कम से कम यह मानता है कि उसके पास हठधर्म हैं। हमारी राजनीति के पास वही हठधर्म हैं और वह उन्हें सामान्य समझ कहती है। दोनों आपसे कहते हैं कि बिना जाँचे विश्वास कीजिए। दोनों में से सिर्फ़ एक में इतनी शराफ़त है कि वह उसे आस्था कहता है।

और एक सबक़ है जो यह देश कभी नहीं सीखा, हालाँकि वह सदियों से अपनी वेदियों के सामने खड़ा रहा है। दिखावटी अधीनता ही असली छिपी हुई विजय है। इसे केवल वही आदमी पढ़ सकता है जिसकी जेबें खाली हों।

जबकि एक तरफ़ पूँजी चढ़ती जाती है, दूसरी तरफ़ कोई ठीक उतना ही थामे रहती है जितना वह सँभाल सकती है, जैसे कोई कूपिए कैसीनो की मेज़ चलाता है। घर कभी आवाज़ ऊँची नहीं करता। घर इंतज़ार करता है। और यही एक चीज़ है जो हम तय कर चुके हैं कि हम नहीं कर सकते।

इटली। एक ऐसा देश जहाँ आप बीस दिन की छुट्टी पर आते हैं, अच्छा खाते हैं, फिर तुरंत निकल जाते हैं। क्योंकि यह ऐसी जगह नहीं जिसकी मैं सिफ़ारिश करूँ।

Ferdinando